अंडरपास में गिरकर मरा, जिम्मेवार कौन ?

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 3 सितम्बर को ओल्ड फ़रीदाबाद रेलवे अंडरपास में गिरकर एक व्यक्ति बेमौत मारा गया। इसके लिये किसी को जिम्मेवार न ठहरा कर मामले को दुर्घटना बताकर पुलिस ने रफ़ा-दफ़ा कर दिया।

हुआ यूं कि एक व्यक्ति जो रोज़ाना फतेहपुर चंदीला की ओर से ओल्ड फ़रीदाबाद के चौक तक आने के लिये अंडरपास का इस्तेमाल करता था और उसमें पानी भरे होने के चलते रेलवे द्वारा बनाई गई दीवार फ़ांद कर चौक की ओर जाता था। यही कवायद करते समय उसका पांव फ़िसल गया और वह 20 फुट नीचे अंडरपास में जा गिरा और मौके पर ही मर गया। अंडरपास बनाने के लिये रेलवे ने अपनी ओर से पैसा खर्च करके उस भाग का निर्माण किया था जो रेलवे पटरियों के नीचे से गुजरता है।

जाहिर है कि इतना खर्च करने के बाद रेलवे नहीं चाहेगा कि लोग उनकी पटरियों पर से आवागमन करते हुए दुर्घटनाओं को न्योता दें। इसी को देखते हुए रेलवे ने दोनों तरफ़ ऊंची-ऊंची दीवारें खड़ी कर दी, बेशक रेलवे अपनी जगह ठीक है लेकिन अंडरपास में पानी भरे होने की स्थिति में दैनिक आवागमन करने वाले लोग रेलवे की दीवार को फ़ांद कर निकलते हैं। इसके विकल्प में लम्बा चक्कर काटने का समय उनके पास नहीं होता।

अब सवाल यह पैदा होता है कि आये दिन बारिश के बाद अंडरपास क्यों डूब जाता है? वहां से जल निकासी का दायित्व जिस नगर निगम का है, क्या अब वह इस हत्या की दोषी नहीं हैं?

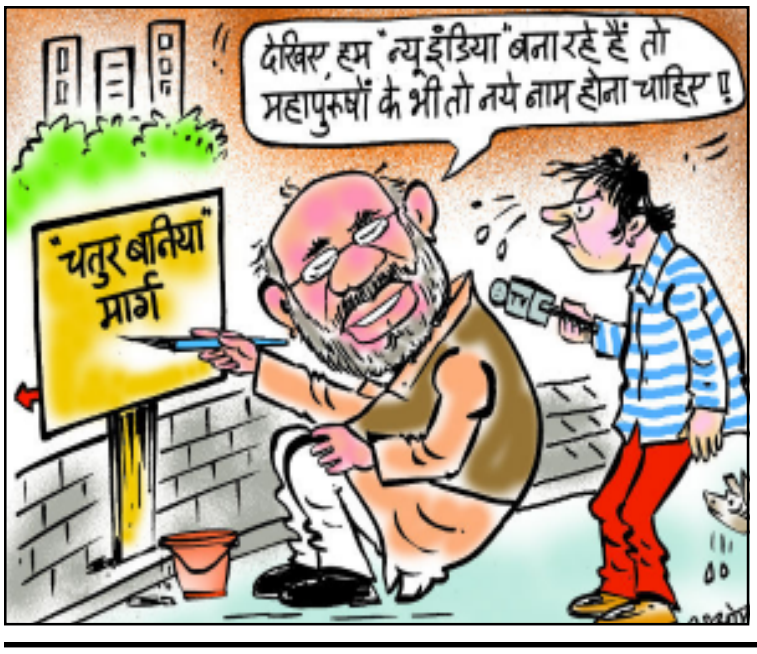

बेशर्मी की इन्तहा: जलभराव से पीड़ितों को सजावटी चित्रकारियों से बहलायेंगे

फ़रीदाबाद (म.मो.) वर्षा जैसा प्रकृति का वरदान इस शहर पर अभिशाप बन कर बरसता है। तीनों रेलवे अंडरपासों में गाड़ियां डूब जाती हैं तमाम सड़कों पर भारी जाम के चलते वाहन रेंगने लगते हैं। कोई भी आधुनिक सेक्टर ऐसा नहीं जिसमें सड़कें तालाब की शक्ल न लेती हों। वाहनों में तीन-तीन गुणा अधिक ईंधन फुंकने से प्रदूषण तो बढता ही है जेब भी कटती है। कहीं पर भी लोग समय से काम पर नहीं जा पाते। और तो और हॉकर तक अखबार बांटने पानी में डूबी सड़कों पर निकलने का जोखिम नहीं उठा पाते, न जाने कब किस गड्ढे में जा गिरें। इस से अखबार का व्यवसाय भी वर्षा वाली सुबह को ठप्प हो जाता है।

ऐसी भयंकर स्थिति से निजात दिलाना तो सरकार के वश में नहीं है, हां ध्यान भटकाने के लिये सड़कों के आस-पास सजावट करने की घोषणायें जोर-शोर से की जा रही है।

यह ठीक वैसा ही है जैसे मातम के समय ब्याह के गीत गाना। बड़खल चौक मैट्रो स्टेशन से अजरोंदा स्टेशन तक के मैट्रो पिल्लरों पर दो करोड़ की लागत से 3-डी चित्रकारी की योजना तैयार कर ली गयी है। इन पिल्लरों के साथ-साथ सर्विस रोड, साइकिल ट्रैक व फुटपाथ भले ही न हो, जलनिकासी भले ही न हो परन्तु 3-डी चित्रकारी पर जरूर दो करोड़ खर्च करेंगे। यानी अब तक लोग दुर्घटनाग्रस्त कम हो रहे हों तो चित्रकारी देखते-देखते जरूर दुर्घटनाओं का शिकार हो जायेंगे। वैसे दुर्घटनाओं की ज्यादा चिंता करने की जरूरत इस लिये भी नहीं होनी चाहिये कि यह चित्रकारी कौन सी स्थाई होने वाली है, यह तो केवल दो करोड़ डकारने तक के लिये ही होगी। बड़खल चौक से बाईपास को जोड़ने वाली सड़क जो बीते दो साल में करोड़ों की लागत से बना कर तैयार की गयी है, जबकि यहां पहले से ही अच्छी भली सड़क थी, की सजावट पर तो स्मार्ट सिटी कम्पनी कुछ ज्यादा ही मेहरबान होने जा रही है। वाई-फ़ाई के अलावा, उसके किनारे पानी की ओवरहेड टंकी पर रंग बिरंगी, संभवत: तिरंगे के डिजाइन में बिजली से जलने बुझने वाली आकर्षक कलाकृति बनाई जायेगी।

साइकिल ट्रैक व फुटपाथ भले ही न बने परन्तु इस तरह की शोषेबाज़ी की आवश्यकता शासक वर्ग को ज्यादा है, हो भी क्यों न, जब केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर की रिहायशगाह का रास्ता इसी सड़क से होकर जाता हो। नहर पार का ठेका एफएमडीए के नाम से पूर्व नगर निगमायुक्त अनिता यादव आईएएस को दिया गया है। उस क्षेत्र के विकास के नाम का पूरा कारोबार उन्हीं के हाथ में रहेगा। इस काम के लिये उन्होंने नगर निगम में अपने समय के अच्छे-अच्छे सेवानिवृत घोटालेबाज़ों को अपने यहां तैनात करने का मार्ग प्रशस्त्र कर दिया है। लूट-कमाई में कोई कसर न रह जाय इसके लिये उन्होंने नहर-पार क्षेत्र बस सेवा भी खुद चलाने का निर्णय लिया है।

अपने जो सामान्य काम हैं वे तो इनसे होते नही, परिवहन व्यवस्था करने की बात करते हैं, इसके पीछे मकसद केवल लूट कमाई है।

हरामखोरी और रिश्वतखोरी हट जाये तो हर शहर स्मार्ट हो जाये

जब नीयत में खोट हो, हरामखोरी व रिश्वतखोरी ऊपर से नीचे तक नस-नस में समाई हो तो फ़िर नगर निगम के साथ-साथ स्मार्ट सिटी कम्पनी लिमिटेड और एफएमडीए के नाम पर अधिकारियों की कितनी ही बड़ी फ़ौज खड़ी कर लो शहर का सत्यानाश करने में ये सब लोग अपना पूरा ज़ोर लगा देंगे, जैसा कि बीते करीब 4-5 साल से देखा जा रहा है स्मार्ट सिटी के नाम पर कम्पनी खड़ी करके हजारों करोड़ रुपया तो डकारा सो डकारा शहर का सत्यानाश किया सो अलग से। सेक्टर 21-डी व 21-बी, सी की विभाजक सड़क जो एनएच 4 की ओर से अनखीर पुलिस चौकी तक जाती है, को बरसों तक खोद कर बनाया, करोड़ों रुपया खर्च करके जल निकासी की व्यवस्था की, लेकिन इसके बावजूद इन बारिशों में यहां रिकॉर्डतोड़ जलभराव हुआ।

शहर को स्मार्ट बनाने के लिये सड़कों के किनारे फुट-पाथ व साइकिल ट्रैक की जो जगह होनी चाहिये उस पर अवैध कब्जे करा दिये गये हैं। सड़कों के दोनों ओर 10-20 फीट की जगह घेर कर अपना सामान रखना हर दुकानदार अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। इतना ही नहीं, इसके बाद यदि कोई जगह बच जाय तो उस पर रेहड़ी या फ़ड़ लगवा कर किराया वसूल करना भी वह अपना अधिकार समझता है। सिटी को और स्मार्ट बनाने के लिये नगर वाले सीवर की सफ़ाई करके मलवे का ढेर सड़क के ऊपर मैन होल पर ही लगा देंगे, जो बरसात में बह कर पुन: सीवर में जाता है या सूख कर महीन पाउडर बन कर लोग़ों की सांसों में समा जाता है। रात के अंधेरे में ऐसे ही एक ढेर से टकरा कर अपनी कार को क्षतिग्रस्त करने का अनुभव भी इस संवाददाता को तब हुआ जब वह बीते शनिवार रात 8 बजे एनएच-दो की मुख्य सड़क से गुजर रहा था।

कुल मिला कर सरकार एवं इसकी विभिन्न एजेंसियों को न तो जनता की सुविधाओं से कोई वास्ता हैऔर न ही सिटी की स्मार्टनेस से, इनका कोई वास्ता है तो केवल नौटंकी करके जनता को बहकाने व बजट को डकारने से है।